लेख

होमाई व्यारावाला द्वारा खींची गई- सलामी लेते हुए लॉर्ड माउंटबेटन की फोटो

न जाने मैं कौन सी मिट्टी की बनी हूं
- होमाई व्यारावाला

श्रेया-निमिषा

"यह उस ज़माने की बात है जब कैमरे के वज़न, उसके टंग्स्टन बल्ब और उसकी कारीगरी में इंसान फंस जाता था। एक बटन और फ़ोटो हज़ार वाली तकनीक कल्पना के बाहर थी।"

उस वक्त स्वतंत्रता संग्राम का जोश पूरे भारत में फैला हुआ था और ऐसे माहौल का ऐतिहासिक दस्तावेज़ीकरण करने वाली एकमात्र महिला छायाकार थीं —होमाई व्यारावाला।

आज होमाईबेन अट्ठानवे वर्ष की हैं। चेहरे पर असंख्य झुर्रियों और कम सुनाई-दिखाई देने के अलावा वृद्धावस्था के कोई चिन्ह स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ते। इसका रहस्य है उनका स्वाभिमान और स्वावलंबन से बिताया जीवन। वे कहती हैं, "यह जीवन ही मेरी एकमात्र पूंजी है। आज भी मैं पूरे घर का काम अपने हाथों से करती हूं। छियानवे साल की उम्र तक मैं गाड़ी भी चलाती थी। पर पिछले तीन साल से मुश्किल हो रही है। इसका मुझे बेहद अफ़सोस है।"

होमाईबेन एक पारसी हैं— यह उनकी बोली और पहनावे से झलकता है। उनके घर का प्रत्येक कोना उनकी कलात्मकता का प्रतीक है। घर की पहली मंज़िल पर एक छोटा सा बगीचा है। अपने तमाम पौधों की देखभाल वे स्वयं करती हैं। पौधों के बारे में उनका ज्ञान और लगाव प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध को दर्शाता है।

आज भी अपने घर की साफ़-सफ़ाई, खाना पकाना, कपड़ों की सिलाई के अलावा बिजली व नल सुधारने जैसे तकनीकी काम भी वे खुद करना पंसद करती हैं। उनका

मानना है कि केवल उनका शरीर बूढ़ा हुआ है दिल और आत्मा अभी भी जवान है।

नई तकनीक अपनाने में भी होमाईबेन को ज़रा भी तकलीफ़ नहीं हुई। आज हम अपने आसपास देखते हैं कि पचास-साठ वर्ष की औरतें भी मोबाइल व कम्प्यूटर इस्तेमाल करने में हिचकिचाती हैं। परन्तु होमाईबेन ने सहजता से सब कुछ अपना लिया है।

होमाई व्यारावाला का जन्म नवसारी, गुजरात में सन 1913 में हुआ था। पिता डोसाभाई कलाकार थे और नाटकों में स्त्री किरदार निभाते थे। होमाईबेन भी कलाकार बनना चाहती थीं परन्तु अभिनय क्षेत्र में औरतों का जाना वर्जित था। अपने माता-पिता के साथ वे जगह-जगह घूमती हुई पलीं। पिता के अस्थाई रंगमंच के जीवन के कारण परिवार को आर्थिक मुसीबतों का सामना करना पड़ता था। इसलिए उनकी मां ने बच्चों के साथ मुंबई में रहना शुरू कर दिया। पारसी लोगों को खाना खिलाकर तथा उनके कपड़ों की सिलाई से घर का खर्चा चलता। होमाईबेन की माता अनपढ़ थीं परन्तु उन्होंने अपने बच्चों को खूब पढ़ाने-लिखाने का मन बना रखा था। ग्रांट रोड की माध्यमिक पाठशाला में उनकी शिक्षा हुई। पाठशाला के प्रधानाचार्य की मदद से होमाई ने ट्यूशन करके घर के खर्चे में मदद करनी शुरू की। माता ने घर का खर्च पूरा करने के लिए पेंइग गेस्ट भी रखने शुरू कर दिये। अस्थाई जीवन शैली के कारण उनके पिता की तबियत खराब रहने लगी थी। होमाई के सत्रह वर्ष की होने पर पिता की मृत्यु हो गई। वे अपनी बेटी को भारत की सर्वप्रथम महिला छायाकार बनते नहीं देख पाए।

होमाई हर काम में अपनी माता की मदद करती थीं। उन्होंने कभी नहीं सोचा कि वे एक महिला हैं इसलिए वह किसी से कम हैं। पढ़ाई के दौरान ही होमाई की दोस्ती माणिकशाह व्यारावाला से हुई। दोनों की दोस्ती गहराती गई और फ़ोटोग्राफ़ी का शौक उन्हें और करीब ले आया। वे रेलवे स्टेशन पर मिलते और जगह-जगह तस्वीरें खींचने के लिये घूमते। माणिकशाह ने अपने घर के स्नानागार में "डार्करूम" बना रखा था। इस कमरे में होमाई फ़ोटो को प्रिन्ट करती थीं। दोनों के पास एक ही कैमरा था। पहचान के लिए होमाई अपनी खींची हुई फ़ोटो के फ्रेम में अपनी शक्ल भी लगा देती थी। परन्तु फ़ोटो माणिकशाह के नाम से ही छपते थे।

इसी तरह फ़ोटो खींचते-खींचते होमाईबेन ने जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्टस से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। होमाईबेन को फ़ोटोग्राफ़ी में खास दिलचस्पी तो थी ही, इस विद्या में उनकी समझ भी अद्‌भुत थी। वे विभिन्न पत्रिकाओं में छपी तस्वीरों से भी फ़ोटोग्राफ़ी की रचना पर अपना ज्ञान बढ़ाने का प्रयास करतीं। 1940 तक आते-आते उन्होंने सही मायने में फ़ोटोग्राफ़ी की शुरुआत की। *बाम्बे क्रानिकल* अखबार में उनके फ़ोटो पहली बार उनके अपने नाम से छपने लगे।

1941 में माणिकशाह और होमाईबेन ने विवाह कर लिया। इसी बीच विश्व युद्ध के दौरान उन्हें आवश्यक सेवाओं का ब्रोशर बनाने का काम मिला। इस ब्रोशर पर उन्होंने जी-तोड़ मेहनत की जिसके फलस्वरूप उन्हें व माणिकशाह को *हाईकमीशन ऑफ़ ईस्टर्न ब्यूरो* में छायाकार की नौकरी मिल गई। पति-पत्नी दोनों नौकरी के चलते दिल्ली रहने लगे। माणिकशाह का ज़्यादा समय डार्करूम और तकनीकी काम में गुज़रता। इसलिये फ़ोटो खींचने की पूरी ज़िम्मेदारी होमाईबेन ने संभाल ली। देश की आज़ादी के संघर्ष को चित्रांकन करने का काम वे दिन-रात लगन से करती थीं। जब साथी पुरुष उनकी तारीफ़ करते तो हंसते-हंसते कहतीं, 'अगर मेरा काम आपको इतना सुंदर लगता है तो आप अपनी पत्नी और बेटी को भी छायाकार बनने के लिए प्रेरित क्यों नहीं करते?'

पर कई पुरुषों के लिए होमाईबेन को बतौर छायाकार स्वीकारने में तकलीफ़ होने लगी थी। एक बार भारत सरकार ने युद्धकाल के दौरान फ़ोटो खींचने का काम होमाईबेन को सौंपा और फ़िल्म बनाने की ज़िम्मेवारी एक प्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशक को दी। छोटे कद वाली महिला छायाकार को देखकर निर्देशक महोदय ने उनका मज़ाक उड़ाने वाले अंदाज़ में कहा, 'ये कैमरे वाली बहन अपना शौक पूरा करने यहां आई है क्या?' दूसरे दिन होमाईबेन के खींचे फ़ोटो अखबार में छप गये और सभी ने उनके काम की सराहना की। निर्देशक साहब ने अपना काम पूरा नहीं किया और साथ ही घोषणा की कि वे उस प्रोजेक्ट में काम नहीं करेंगे जिसमें होमाईबेन होंगी। उस दौर में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाने वाली पहली फ़ोटो-जर्नलिस्ट होमाईबेन बनीं।

युवा होमाई व्यारावाला

होमाईबेन मानती हैं कि वे किसी भी परिस्थिति, समय, जगह, काम के लिए जाने को सदैव तैयार रहती थीं। शुरू-शुरू में, अलग-अलग कोणों से तस्वीर खींचने के लिए साड़ी पहनकर दीवार पर चढ़ना बहुत मुश्किल होता था। बाद में उन्हें इसकी आदत पड़ गई। वे कहती हैं कि उन्हें कभी भी अपना कर्तव्य पूरा करने में औरत होने के कारण कोई संकोच नहीं हुआ। काम को उन्होंने बस काम की तरह देखा।

अपने पति को याद करते हुए होमाईबेन बताती हैं कि वे सही मायने में उनके जीवन साथी थे। दोनों के बीच सहज सामंजस्य था। "हम दोनों को अंग्रेज़ी फ़िल्में देखने का शौक था। बच्चों की देखभाल के कारण हम एक साथ नहीं जा पाते थे। दोनों अलग-अलग फ़िल्म देखते थे। ऐसा देखकर सबको लगता था कि हम दोनों के बीच अनबन है।"

एक घटना का ज़िक्र करते हुए होमाईबेन बताती हैं कि एक ब्रोशर तैयार करने के लिये हमें मृत शरीर के फ़ोटो लेने थे। जब माणिकशाह प्रयोगशाला में पहुंचे तो कटे हुए शरीरों को देखकर वे सन्न रह गये। तब होमाईबेन ने उन्हें बाहर बैठाकर खुद यह काम पूरा किया। वे कहती हैं कि अपनी भावनाओं को वे अपने काम से अलग रखती थीं।

पैंतालीस वर्ष की उम्र में उन्होंने माणिकशाह की मृत्यु के सदमे को पूरी गरिमा के साथ झेला। बीमार पति की सेवा करते हुए वे प्रार्थना करती थीं कि उनको यातना विहीन मृत्यु मिले। "मैं नहीं चाहती थी कि वे एक अपाहिज सा जीवन गुज़ारे। उनकी आखों का दर्द देखकर ही मैंने ऐसी प्रार्थना की।"

1971 में होमाईबेन ने फ़ोटोग्राफ़ी छोड़ दी। फिर उन्होंने अपने अन्य शौक पूरे किये— सिलाई-कढ़ाई-बागवानी, किताबें पढ़ना आदि। अपने बेटे फारुख की कैंसर से मृत्यु को भी उन्होंने सहजता से स्वीकारा। उन्होंने अपनी बहू को भी समझाया कि दुःखी न हो बल्कि अपने भविष्य के बारे में सोचे। अगर कोई अच्छा साथी मिले तो दोबारा नया जीवन शुरू करे।

होमाईबेन परिस्थिति और भावनाओं को बिना मिलावट अलग-अलग देख सकती हैं। परिस्थिति को एक तस्वीर की तरह अपने जीवन में ढाल लेती हैं। पूछने पर कि इस उम्र में वे इतनी निश्चिंत, इतनी स्वावलंबी कैसे रह पाती हैं? वे कौन सी मिट्टी की बनी है? उनका जवाब है -"मालूम नहीं। शायद मैं हवा या फिर पानी की बनी हूं। कोई भी आकार ले लेती हूं। कब और कहां चल बसूंगी मुझे भी पता नहीं है। जब तक ज़िंदा हूं भरपूर जीवन जीऊंगी।"

मूल गुज़राती से अनुवादः विभूति पटेल

श्रेया *व* ***निमिषा*** *ओढ़ख, गुजरात में कार्यरत हैं।*

अलविदा होमाईबेनः हमें बेहद दुःख है कि इस अंक के छपते-छपते होमाईबेन ने हमारा साथ छोड़ दिया। 15 जनवरी 2012, रविवार की सुबह सांस की तकलीफ के कारण उनका वडोदरा में देहान्त हो गया। होमाईबेन की प्रेरणादायक शख्सियत को हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि।